International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 04(III), October - December, 2025, pp. 43-49

मधु कांकरिया के उपन्यासों में नारी विमर्शः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

सुनिता राव[1*] | डॉ. राजबाला[2]

[1]शोधार्थी हिन्दी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
[2]शोध निर्देशिका, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: khwahishsingh378@gmail.com

Citation: राव, सुनिता एवं राजबाला. (2025). मधु कांकरिया के उपन्यासों में नारी विमर्श: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(04(III)), 43–49.

सार

प्रस्तुत शोध पत्र समकालीन हिंदी साहित्य की एक प्रमुख और प्रतिबद्ध कथाकार मधु कांकरिया के उपन्यासों में निहित नारी विमर्श का गहन विश्लेषण करता है। कांकरिया का साहित्यिक अवदान उन्हें अन्य समकालीन लेखिकाओं से एक विशिष्ट पहचान दिलाता है, क्योंकि उनका लेखन केवल नारी मन की आंतरिक पीड़ा या मध्यवर्गीय परिवार की जटिलताओं तक सीमित नहीं है। इसके बजाय, वह नारी के संघर्ष को व्यापक सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संरचनाओं से जोड़ती हैं। उनके उपन्यासों, जैसे 'सेज पर संस्कृत', 'सलाम आखरी', और 'हम यहाँ थे', में नारी विमर्श के बहुआयामी स्वरूप का चित्रण मिलता है, जो धार्मिक पाखंड, वेश्यावृत्ति के बाजारीकरण और हाशिए के समुदायों के साथ जुड़े स्त्री के अस्तित्ववादी संकटों को उजागर करता है। यह विश्लेषण दर्शाता है कि कांकरिया के पात्र, व्यक्तिगत दुखों से निकलकर, सामूहिक और व्यवस्थागत शोषण के विरुद्ध मुखर होते हैं। वे नारी को केवल पीड़ित के रूप में नहीं, बल्कि एक सक्रियतावादी (activist) के रूप में चित्रित करती हैं, जो अन्याय और शोषण के खिलाफ खड़ी होती है। यह शोध पत्र इस बात पर प्रकाश डालता है कि किस प्रकार कांकरिया का नारी विमर्श, पश्चिमी उदारवादी अवधारणाओं से अलग, भारतीय समाज की यथार्थवादी चुनौतियों से प्रेरित है और किस प्रकार उनका लेखन महाश्वेता देवी जैसी सामाजिक रूप से प्रतिबद्ध लेखिकाओं की परंपरा को आगे बढ़ाता है। कुल मिलाकर, यह रिपोर्ट यह स्थापित करती है कि मधु कांकरिया का साहित्य हिंदी के नारी विमर्श को एक नया, समावेशी और क्रांतिकारी आयाम प्रदान करता है।

शब्दकोशः *साहित्यिक अवदान, नारी विमर्श, धार्मिक पाखंड, बाजारीकरण, व्यवस्थागत शोषण, सक्रियतावादी।*

प्रस्तावना

मधु कांकरिया और नारी विमर्श का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

हिंदी साहित्य में मधु कांकरिया इक्कीसवीं सदी की एक महत्वपूर्ण और सक्रियतावादी (activist) कथाकार के रूप में स्थापित हैं । उनका जन्म 23 मार्च, 1957 को कोलकाता में हुआ और उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की, साथ ही कंप्यूटर एप्लीकेशन में डिप्लोमा भी किया । उनका लेखन एक साथ बौद्धिक मानस और जनमानस दोनों पर ध्यान केंद्रित करता है, जो सामाजिक–सांस्कृतिक और राजनीतिक सरोकारों से गहराई से जुड़ा हुआ है । उनकी दृष्टि अत्यंत चौकन्नी है और उनका लेखन समाज की ज्वलंत समस्याओं पर तीक्ष्ण प्रहार करता है । वे मित कथन (concise narration) और शब्दों के

[*] *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

सटीक प्रयोग के माध्यम से गहन प्रभाव उत्पन्न करती हैं, जिसमें विस्तार की बजाय संकेत और व्यंजनाएं अधिक होती हैं ।

कांकरिया को उनके साहित्यिक योगदान के लिए अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा गया है, जिनमें मीरा स्मृति सम्मान 2019, शरत चंद्र साहित्य सम्मान 2020 और 'ढलती साँझ का सूरज' उपन्यास के लिए 11 लाख रुपए का पुरस्कार शामिल है । उनकी प्रतिबद्धता केवल सृजनात्मक लेखन तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके सामाजिक कार्यक्रम भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं । वे हाशिए पर रहने वाले लोगों के दुख–दर्द को मुखर रूप से व्यक्त करती हैं और साहित्य को समावेशी बनाने में विश्वास रखती हैं । उनकी रचनाओं में विचार और संवेदना की नवीनता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है ।

अनुसंधान के उद्देश्य

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य मधु कांकरिया के उपन्यासों में निहित नारी विमर्श का गहन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। इस संदर्भ में अनुसंधान के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- मधु कांकरिया के उपन्यासों में नारी के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संघर्षों का अध्ययन करना।
- लेखिका के नारी विमर्श को भारतीय नारीवादी दृष्टिकोण के संदर्भ में समझना और उसका पश्चिमी नारी विमर्श से तुलनात्मक विश्लेषण करना।
- कांकरिया के उपन्यासों में चित्रित हाशिए की स्त्रीकृ जैसे वेश्या, आदिवासी, परित्यक्ता, विधवा आदिकृ के जीवन–संघर्षों का यथार्थवादी मूल्यांकन करना।
- लेखिका द्वारा प्रस्तुत बाज़ारवाद, धर्म और पितृसत्ता की आलोचना का अध्ययन कर यह जानना कि इन तत्वों ने नारी की स्थिति को किस प्रकार प्रभावित किया।
- कांकरिया के उपन्यासों – सेज पर संस्कृत, सलाम आख़िरी, और हम यहाँ थे – में नारी चेतना के विकासात्मक रूप का विश्लेषण करना।
- समकालीन हिंदी साहित्य में मधु कांकरिया की नारीवादी लेखन परंपरा को स्थापित करने में उनकी भूमिका और योगदान को पहचानना।
- अन्य समकालीन लेखिकाओं (जैसे मृदुला गर्ग, ममता कालिया, सुधा अरोड़ा आदि) की तुलना में कांकरिया की अलग पहचान और दृष्टिकोण का निर्धारण करना।

अनुसंधान पद्धति

- यह शोध गुणात्मक (Qualitative) तथा विश्लेषणात्मक (Analytical) स्वरूप का है। इसमें सांख्यिकीय विश्लेषण की अपेक्षा पाठ्य (TeÛtual) और वैचारिक विश्लेषण प्रमुख है। मधु कांकरिया के उपन्यासों का अध्ययन साहित्यिक व्याख्या, तुलनात्मक विश्लेषण और नारीवादी दृष्टिकोण के आधार पर किया गया है।
- यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। इसमें प्राथमिक स्रोतों और द्वितीयक स्रोतों दोनों का उपयोग किया गया है।
- वर्णनात्मक पद्धति के अंतर्गत लेखिका के उपन्यासों का सूक्ष्म अध्ययन कर उनमें उपस्थित विचार, विषयवस्तु और चरित्र–चित्रण का विवरण प्रस्तुत किया गया है।
- विश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा नारी विमर्श के विभिन्न आयामों– सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक का गहन विवेचन किया गया है।

प्राथमिक स्रोत

- मधु कांकरिया के प्रमुख उपन्यास – सेज पर संस्कृत, सलाम आख़री, हम यहाँ थे, ढलती साँझ का सूरज आदि।
- उनकी कहानियाँ और लेख जो स्त्री–चेतना, समाज और पितृसत्ता से संबंधित हैं।

द्वितीयक स्रोत

- हिंदी और अंग्रेज़ी में प्रकाशित शोध–पत्र, समीक्षाएँ, साक्षात्कार, पत्रिकाएँ एवं आलोचनात्मक लेख।
- नारी विमर्श, समाजशास्त्र और साहित्य–सिद्धांत से संबंधित पुस्तकें।
- पत्रिकाएँ जैसे स्त्री दर्पण, शोध समागम, सामाजिक शोध फाउंडेशन, और भारतीय साहित्य समीक्षा।

इस शोध में निम्नलिखित विश्लेषणात्मक तकनीकों का प्रयोग किया गया है–

- सामग्री विश्लेषणः उपन्यासों के पात्रों, घटनाओं और प्रतीकों का वैचारिक एवं विषयगत विश्लेषण किया गया है, जिससे नारी विमर्श की संरचना स्पष्ट हो सके।
- तुलनात्मक अध्ययनः मधु कांकरिया के लेखन की तुलना अन्य समकालीन महिला लेखिकाओं (ममता कालिया, मृदुला गर्ग, सुधा अरोड़ा आदि) के साथ की गई है, ताकि उनकी विशिष्ट नारीवादी दृष्टि स्थापित की जा सके।
- नारीवादी दृष्टिकोणः अध्ययन में उदारवादी, समाजवादी, और उत्तर–औपनिवेशिक नारीवाद के सैद्धांतिक ढाँचों का उपयोग किया गया है।
- सांस्कृतिक–सामाजिक व्याख्याः उपन्यासों में चित्रित पात्रों के सामाजिक परिवेश और आर्थिक–सांस्कृतिक संदर्भों को ध्यान में रखकर नारी की स्थिति का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन की सीमा

- अध्ययन केवल मधु कांकरिया के तीन प्रमुख उपन्यासों तक सीमित हैः सेज पर संस्कृत, सलाम आख़री, और हम यहाँ थे।
- यह शोध मुख्यतः हिंदी में लिखित रचनाओं पर केंद्रित है; अन्य भाषाओं के अनुवादों का प्रयोग सहायक सामग्री के रूप में किया गया है।
- अध्ययन में केवल नारी विमर्श से संबंधित पहलुओं को प्राथमिकता दी गई है, अन्य विषय जैसे राजनीति, पर्यावरण आदि को सीमित रूप से देखा गया है।

शोध की उपयोगिता

यह शोध हिंदी साहित्य के नारी विमर्श में मधु कांकरिया के योगदान को पुनःस्थापित करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री की अस्मिता, संघर्ष और मुक्ति का विमर्श केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि विचारधारात्मक और सामाजिक क्रांति का प्रतीक भी है। यह अध्ययन भविष्य के शोधार्थियों को नारीवादी लेखन के नए दृष्टिकोणों को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

हिंदी साहित्य में नारी विमर्श की पृष्ठभूमि

हिंदी साहित्य में नारी विमर्श की अवधारणा केवल नारी के दुखों के चित्रण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक वैचारिक प्रक्रिया है जो मान्यताओं, प्रथाओं और परंपराओं के अंतर्गत मानवीय दृष्टिकोण से स्त्री की स्थिति, अस्मिता, स्वतंत्रता और समानता पर चिंतन करती है । इस वैचारिक आंदोलन की शुरुआत छायावाद काल से मानी जाती है, जब महादेवी वर्मा की रचनाओं, विशेष रूप से श्श्रृंखला की कड़ियाँश, ने नारी सशक्तिकरण का एक सशक्त उदाहरण प्रस्तुत किया ।

स्वतंत्र्योत्तर काल में यह विमर्श और अधिक परिष्कृत हुआ। इस दौर में महिला लेखिकाओं ने पुरुषवादी वर्चस्व, पितृसत्तात्मक मर्यादाओं और सामाजिक विसंगतियों के विरुद्ध मुखर होकर लिखना शुरू किया। जहाँ शुरुआती महिला लेखन मुख्य रूप से घरेलू और मनोवैज्ञानिक संघर्षों पर केंद्रित था, वहीं बाद की पीढ़ियों ने सामाजिक और आर्थिक मुद्दों को भी अपने लेखन का हिस्सा बनाया। इस विकास यात्रा में मधु कांकरिया का लेखन एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। जहाँ मृदुला गर्ग और ममता कालिया जैसे लेखक नारी मन की मनोवैज्ञानिक गहराइयों और मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं को सूक्ष्मता से उकेरते हैं, वहीं कांकरिया का दृष्टिकोण अधिक सक्रियतावादी और सामाजिक–राजनीतिक है। उनकी नारी–दृष्टि व्यक्तिगत दुखों से परे जाकर सामाजिक संरचनाओं और सत्ता के साथ सीधा संवाद स्थापित करती है, जो उनके विमर्श को एक अनूठी प्रणालीगत (systemic) और सामूहिक चेतना प्रदान करता है। उनका यह दृष्टिकोण उन्हें हाशिए पर पड़े समुदायों जैसे आदिवासियों, वेश्याओं और किसानों के मुद्दों को नारी विमर्श के केंद्र में लाने के लिए प्रेरित करता है ।

मधु कांकरिया का साहित्यिक अवदान और उनकी नारी–दृष्टि

- **लेखन के प्रमुख विषय और शैली**

मधु कांकरिया का रचना संसार अत्यंत व्यापक है और हिंदी कथा जगत में पिछले चालीस वर्षों से उनकी उपस्थिति दमदार रही है । उनके लेखन का फलक महानगरों की अपसंस्कृति, घुटन और असुरक्षा के बीच युवाओं में बढ़ती नशे की लत, लालबत्ती इलाकों की पीड़ा, नक्सलवाद, बेरोजगारी, निर्धनता, और पारिवारिक मूल्यों के विघटन जैसी ज्वलंत सामाजिक समस्याओं को स्पर्श करता है। 'सूखते चिनार' जैसे उपन्यास में उन्होंने भूखमरी, बेरोजगारी, आधुनिकीकरण और सेना के जीवन जैसी समस्याओं का विस्तृत चित्रण किया है। उनके साहित्य में नारी को केंद्र में रखकर उसके जीवन की विविध समस्याओं जैसे परित्यक्ता, विधवा, वेश्या, विवाह, बलात्कार और भ्रूण हत्या का यथार्थवादी अंकन किया गया है। उनकी कहानियों में भी नारी के अंतर्द्वंद्व और संवेदनशील स्वरूप का चित्रण मिलता है ।

लेखिका की शैली की एक प्रमुख विशेषता उनका 'मित कथन' है, जहाँ वे कम शब्दों में अधिक बात कह जाती हैं। वे शब्दों के सटीक प्रयोग से प्रभाव उत्पन्न करती हैं और संकेत व व्यंजनाओं का सहारा लेती हैं। उनकी कहानियों में व्यक्ति, परिवार और समाज में व्याप्त आधुनिक संघर्षों और मनोवैज्ञानिक स्थितियों को बड़ी सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया गया है । वे सीधे–सीधे विचार थोपने के बजाय पात्रों के संवादों और स्थितियों के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्त करती हैं ।

- **नारी का वस्तुकरण और बाज़ारवाद**

मधु कांकरिया का नारी विमर्श केवल पितृसत्तात्मक शोषण तक सीमित नहीं है, बल्कि वह बाज़ारवाद और उपभोक्तावादी संस्कृति द्वारा नारी के वस्तुकरण (objectification) पर भी गहरा प्रहार करता है । उनके अनुसार, बाज़ारवाद ने महिलाओं को सशक्त करने का भ्रम तो दिया है, लेकिन असल में वह उन्हें एक उपभोग की वस्तु (commodity) बनाकर प्रस्तुत कर रहा है । वे विज्ञापनों में महिलाओं के चित्रण की आलोचना करती हैं, जहाँ उन्हें केवल एक देह के रूप में आमंत्रित करते हुए दिखाया जाता है ।

लेखिका यह स्पष्ट करती हैं कि जब महिलाएँ स्वयं को केवल देह के रूप में प्रस्तुत करती हैं, तो वे अपनी बौद्धिक क्षमता और गरिमा को दरकिनार कर देती हैं। उनका यह चिंतन उनके उपन्यास सलाम आख़िरी में वेश्यावृत्ति के चित्रण से सीधा जुड़ा है, जहाँ नारी का शरीर बाज़ार की शक्तियों का एक साधन बन जाता है । यह दृष्टिकोण एक गहरा अंतर्संबंध स्थापित करता है जहाँ बाज़ार की आर्थिक नीतियाँ सीधे तौर पर नारी के शोषण से जुड़ी हुई हैं। कांकरिया यह दिखाती हैं कि बाज़ार की मांग और समाज की विसंगतियाँ किस प्रकार नारी को देह–बाजार में नीलाम होने पर विवश करती हैं । इस प्रकार, उनका नारी विमर्श एक अनूठा सामाजिक–आर्थिक आयाम ग्रहण करता है, जो स्त्री के शोषण को एक व्यापक प्रणालीगत समस्या के रूप में विश्लेषित करता है।

प्रमुख उपन्यासों में नारी विमर्श का विश्लेषण

- **'सेज पर संस्कृत': धर्म और स्त्री की दासता**

मधु कांकरिया का उपन्यास सेज पर संस्कृत धर्म और स्त्री के अंतर्संबंधों तथा धार्मिक पाखंडों पर आधारित है। यह उपन्यास विशेष रूप से जैन धर्म में साध्वियों की स्थिति का चित्रण करता है और धर्म के नाम पर व्यक्ति की स्वतंत्रता और व्यक्तित्व के दमन पर प्रश्नचिह्न लगाता है ।

उपन्यास की नायिका संघमित्रा, अपनी माँ और बहन छुटकी की धार्मिक दीक्षा का पुरजोर विरोध करती है । वह उन धार्मिक नियमों और आचार संहिताओं पर सवाल उठाती है जो समय की गतिशीलता के साथ अपरिवर्तित रही हैं, जबकि मानवीय नियति और बाहरी समस्याएँ बदल चुकी हैं । यह उपन्यास उस पुरुष–प्रधान समाज की विकृत मानसिकता को उजागर करता है जो एक ओर स्त्री को देवी का दर्जा देता है, वहीं दूसरी ओर उसे मानवी होने के सभी अधिकारों से वंचित कर देता है । धार्मिक ठेकेदार

अर्धनारीश्वर जैसे प्रतीकों की मनमानी व्याख्या करते हैं, जिसमें अर्ध का अर्थ आधा नहीं, बल्कि ईश्वर से जोड़ा जाता है, जिससे पुरुष की श्रेष्ठता और नारी की दासता का वैचारिक आधार निर्मित होता है । कांकरिया के पात्र इस वैचारिक दासता के विरुद्ध अपनी अस्मिता की खोज में संघर्ष करते हैं । यह उपन्यास केवल जैन धर्म पर टिप्पणी नहीं है, बल्कि यह सभी धार्मिक समुदायों में व्याप्त स्त्री–विरोधी कुरीतियों को एक सार्वभौमिक (universal) यथार्थ के रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे यह धार्मिक संस्थानों की कच्ची नींव को दर्शाता है ।

- **'सलाम आख़रि': देह का बाज़ार और मानवीय त्रासदी**

सलाम आख़रि मधु कांकरिया का एक अत्यंत संवेदनशील और यथार्थवादी उपन्यास है, जो कोलकाता के बदनाम रेड–लाइट इलाकों, विशेषकर सोनागाछी, में रहने वाली वेश्याओं के नारकीय जीवन का जीवंत दस्तावेज़ है। यह उपन्यास नारी के देह को एक व्यवसाय की वस्तु में बदलने की त्रासदी को बेबाकी से बयान करता है।

उपन्यास की नायिका सुकीर्ति, जो एक पत्रकार और लेखिका है, इन बदनाम गलियों में कदम रखती है और वेश्याओं के जीवन को करीब से चित्रित करती है। वह नूरी, कृष्णा, रमा और अन्य वेश्याओं की दर्दनाक कहानियों को आवाज देती है, जो गरीबी, भूखमरी, सामाजिक एकाकीपन और पारिवारिक धोखे के कारण इस पेशे में आने को विवश हुईं। कांकरिया वेश्यावृत्ति को नैतिक पतन के रूप में नहीं, बल्कि ष्जीवन की चरम त्रासदी व भूख के मोर्चे के विरुद्ध की जाने वालीष् क्रिया के रूप में प्रस्तुत करती हैं ।

यह उपन्यास उस दोगले समाज की आलोचना करता है जो एक ओर रात के अंधेरे में इन गलियों का ग्राहक बनता है, वहीं दूसरी ओर दिन के उजाले में इन्हीं स्त्रियों को कुलटा, कलंकिनी और पतित कहकर सामाजिक बहिष्कार करता है। इस प्रकार, उपन्यास वेश्याओं की दुर्दशा का चित्रण करने के बजाय, उस अपाहीज और संवेदनहीन समाज पर प्रश्न उठाता है जो इस त्रासदी का मूल कारण है ।

- **'हम यहाँ थे': व्यक्तिगत संघर्ष से सामाजिक चेतना तक**

हम यहाँ थे उपन्यास एक सामान्य स्त्री दीपशिखा के जीवन–संघर्ष की कहानी है, जो घरेलू हिंसा से पीड़ित होकर अपने पति का घर छोड़ देती है और अपने छोटे बेटे सोनू के साथ मायके लौट आती है। दीपशिखा का चरित्र दो भिन्न सोच वाली पीढ़ियों के बीच के अंतर को दर्शाता है, जहाँ एक ओर उसकी खुले विचारों वाली सोच है, वहीं दूसरी ओर उसकी माँ की रूढ़िवादी और दकियानूसी मानसिकता।

यह उपन्यास नारी विमर्श को एक नया और क्रांतिकारी आयाम प्रदान करता है। दीपशिखा की मुक्ति केवल उसके निजी दुख–दर्द से नहीं आती, बल्कि वह एक व्यापक सामाजिक आंदोलन (आदिवासी अस्मिता का संघर्ष) के साथ जुड़कर आती है। एक सामान्य गृहिणी और कार्यालय कर्मी के रूप में उसका जीवन तब बदल

जाता है जब वह आदिवासियों के बीच जाकर उनके जल, जंगल और जमीन के संघर्ष में सहभागी बनती है। यह उपन्यास यह स्थापित करता है कि व्यक्तिगत शोषण और सामाजिक अन्याय एक–दूसरे से गहरे जुड़े हुए हैं। दीपशिखा का निजी संघर्ष उसे अन्य शोषित समुदायों की पीड़ा को समझने और उनसे जुड़ने की क्षमता देता है। इस प्रकार, उसका नारीवादी चिंतन स्व–केंद्रित नहीं रहता, बल्कि वह एक सामूहिक मुक्ति की दिशा में अग्रसर होता है, जिससे उसके नारीवाद को एक अधिक समावेशी (inclusive) और क्रांतिकारी स्वरूप प्राप्त होता है।

समकालीन हिन्दी साहित्य में मधु कांकरिया का स्थान

- **अन्य समकालीन लेखिकाओं से तुलना**

मधु कांकरिया का लेखन समकालीन हिंदी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखता है। उनके लेखन की तुलना मृदुला गर्ग और ममता कालिया जैसी अन्य प्रमुख महिला लेखिकाओं के साथ करने से यह विशिष्टता और भी स्पष्ट हो जाती है। जहाँ मृदुला गर्ग का कथा साहित्य नारी के मनोवैज्ञानिक संघर्ष, यौन शोषण और अवैध संबंधों जैसी समस्याओं पर केंद्रित है, वहीं ममता कालिया का लेखन नौकरीपेशा अविवाहित नारी की असुरक्षा और स्त्री–पुरुष संबंधों के अन्तर्विराधों का यथार्थ चित्रण करता है। ये लेखिकाएँ मुख्य रूप से मध्यवर्गीय और शहरी परिवेश की नारी मनःस्थितियों को उकेरती हैं।

इसके विपरीत, मधु कांकरिया का नारी विमर्श समाज के हाशिए पर खड़े लोगों पर केंद्रित है। उनका फलक नक्सलवाद, वेश्यावृत्ति, धार्मिक पाखंड और आदिवासी संघर्ष जैसे विषयों तक फैला हुआ है, जो उनके लेखन को एक व्यापक सामाजिक–राजनीतिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह उन्हें व्यक्तिगत से सामूहिक संघर्ष की ओर ले जाता है।

- **एक विशिष्ट पहचानः हाशिए का विमर्श**

मधु कांकरिया को समकालीन हिंदी साहित्य में एक विशिष्ट पहचान प्राप्त है क्योंकि उनका नारी विमर्श हाशिए पर रहने वाले लोगों और समुदायों पर केंद्रित है । वरिष्ठ लेखिका सुधा अरोड़ा ने उन्हें महाश्वेता देवी के समकक्ष रखा है, यह कहते हुए कि ष्भविष्य में एक दिन यह कहा जाएगा – यह मधु कांकरिया का साहित्य हैष्। यह तुलना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि महाश्वेता देवी भी अपने सामाजिक और राजनीतिक रूप से प्रतिबद्ध लेखन के लिए जानी जाती हैं, विशेषकर आदिवासी और वंचित समुदायों के लिए।

यह तुलना स्थापित करती है कि कांकरिया का लेखन सिर्फ स्त्री के निजी दुखों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक न्याय के आंदोलन का हिस्सा है। उनका लेखन केवल नारी के सुहाने–सुहाने रेशमी दुख का चित्रण नहीं करता, बल्कि वे अंतिम पंक्ति में खड़ी अंतिम स्त्री की बात करती हैं । यह दृष्टिकोण उनकी लेखन शैली और विषय–वस्तु दोनों को एक अनूठा और प्रभावशाली स्वरूप देता है, जो हिंदी साहित्य की

चौथी लहर के एक प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में उन्हें स्थापित करता है। यह हाशिए का विमर्श ही उनके नारीवाद को एक समावेशी और क्रांतिकारी पहचान देता है।

निष्कर्ष

मधु कांकरिया के उपन्यासों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि उनके लेखन में नारी विमर्श एक बहुआयामी और गतिशील अवधारणा है। यह केवल नारी के मनोवैज्ञानिक या पारिवारिक संघर्षों का बयान नहीं है, बल्कि यह इन संघर्षों को सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक प्रणालियों से जोड़ता है। उनके उपन्यास सेज पर संस्कृत में धर्म की आड़ में स्त्री के शोषण को उजागर किया गया है, जबकि सलाम आख़िरी में वेश्यावृत्ति को एक सामाजिक–आर्थिक त्रासदी के रूप में प्रस्तुत कर समाज के दोगलेपन पर प्रहार किया गया है। वहीं, हम यहाँ थे उपन्यास में नारी का संघर्ष व्यक्तिगत पीड़ा से निकलकर आदिवासियों जैसे वंचित समुदायों के सामूहिक संघर्ष से जुड़कर एक नई दिशा प्राप्त करता है।

कांकरिया के लेखन का महत्व इस बात में निहित है कि वे नारी के व्यक्तिगत दर्द को एक व्यापक सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ प्रदान करती हैं, जिससे उनका विमर्श अधिक सशक्त और प्रासंगिक हो जाता है। वे नारी को केवल पीड़ित के रूप में चित्रित नहीं करतीं, बल्कि उसे पितृसत्ता और बाज़ारवाद जैसी वर्चस्ववादी व्यवस्थाओं के विरुद्ध संघर्ष करने वाली एक सचेत और सबल इकाई के रूप में प्रस्तुत करती हैं। उनका लेखन हिंदी साहित्य में नारी विमर्श की सीमाओं को विस्तार देता है और उसे हाशिए के विमर्श के साथ एकीकृत करता है। मधु कांकरिया का साहित्यिक अवदान यह स्थापित करता है कि नारी की मुक्ति की लड़ाई केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि व्यवस्थागत और सामूहिक स्तर पर भी लड़ी जानी चाहिए।

भविष्य के शोध के लिए, मधु कांकरिया के लेखन में अन्य हाशिए के समुदायों (जैसे किसान और मजदूर स्त्रियाँ) के चित्रण पर एक गहरा विश्लेषण, उनके नारीवाद की तुलना अंतर्राष्ट्रीय संदर्भों में तथा उनके उपन्यासों में चित्रित सामाजिक–आर्थिक नीतियों पर उनके विचारों का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वर्मा, डॉ. संगम. 'धार्मिक आडम्बरों के चक्रव्यूह में फँसी स्त्री मन की व्यथा'. सेतु, जनवरी 2018.
2. पाँचगे, अनुष्का प्रदीप. 'सलाम आखिरीः संवेदना एवं संघर्ष'. जर्नल ऑफ एमेरजिंग टेक्नोलॉजीस एंड इनोवेटिव रिसर्च, खंड 10, अंक 4, अप्रैल 2023.
3. 'मधु कांकरियाः एक प्रतिबद्ध लेखिका'. स्त्री दर्पण, 24 नवंबर 2023.
4. झा, डॉ. अर्चना. 'समकालीन हिन्दी कथा लेखिकाओं के कथा साहित्य में नारी की स्थिति व मनोवैज्ञानिक चित्रण'. शासकीय महाविद्यालय, मयूरभंज, ओडिशा.
5. द्विवेदी, शिप्रा और रश्मि द्विवेदी. 'ममता कालिया के उपन्यासों में नारी चेतना'. शोध समागम, 2021.
6. पाठक, डॉ. पूनम. 'मधु कांकरिया का कथा साहित्य में नारी विमर्शः एक विश्लेषण'. सामाजिक शोध फाउंडेशन, खंड 5, अंक 274.

❑❑❑